शीशमहल (1631–40)

इसे मुगल सम्राट शाहजहाँ ने ग्रीष्म-महल के रूप में बनवाया था। इसमें 2 तालाब हैं, जिनके बीच में एक नहर बहती है, उनमें फुव्वारे लगे हैं और एक झरना गिरता है। जल के ये साधन इस महल को आगरा की भयंकर गर्मी में ठंडा और आरामदेह बनाने के लिए निर्मित किये गये थे। इस महल की प्रमुख विशेषता शीशे का 'मोज़ैक' है जो चूने के विविध रूपकों पर इसकी सभी दीवारों और छतों पर किया गया है। शीशे के इन टुकड़ों में उच्चकोटि के दर्पण का गुण है। यह भवन प्रशस्त दीवारों से बना है, जिसमें केवल कुछ रोशनदान और खिड़कियाँ ही हैं और अन्दर कुछ अँधेरा सा रहता है, जिससे कृत्रिम प्रकाश की आवश्यकता पड़ती है। दिया, मोमबत्ती या मशाल का यह प्रकाश, शीशे के इस 'मोज़ैक' में हज़ारों रूपों में चमकता है और दमदमाता है। इससे यहाँ एक स्वर्गिक वातावरण बन जाता है। यह द्रष्टव्य है कि यह हम्माम नहीं था।

इसके अलंकरण हेतु शीशा 'हलब' (सीरिया में अलीपो) से आयात किया गया था और इसी कारण शाहजहाँ के इतिहासकार लाहौरी ने इसका उल्लेख 'शीशा-ए-हलबी' के नाम से किया है। मूल रूप से यह 'बैज़न्टाइन' कला थी। शाहजहाँ ने लाहौर और दिल्ली में भी शीशमहल बनवाये, किन्तु आगरे का शीशमहल सर्वोत्कृष्ट है।

●

THE SHISH-MAHAL (THE GLASS-PALACE) (1631-40 A.D.)

This was built by the Mughal King Shahjahan as a Summer Palace. It has two tanks with fountains, interconnected by a canal, and a water fall (Abshar). These water-devices were provided to keep it cool and comfortable in the scorching heat of Agra. The distinctive feature of this palace is the glass-mosaic work which has been done, on a wide variety of stucco designs, on all its walls and ceilings. Glass-pieces have high mirror quality. As the building is made up of thick walls with only a few openings, the semi-dark interior required artificial light, which glittered and twinkled in thousand ways through this glass-work. It created an ethereal atmosphere. It was not a *Hammam.*

This glass was imported from "Haleb" (Aleppo in Syria) which is why shahjahan's Historian Lahauri has referred to it as *"Shishaye Halebi"*. Glass mosaic was originally a Byzantine art. Shahjahan built glass palaces also at Lahore and Delhi but this is his finest "Shish-Mahal".